Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 02, April, 2018, pp. 435-438

महिला अध्यापिकाओं के मूल्यों का अध्ययन

डॉ. सीमा शेखावत*

प्रस्तावना

''यत्र नायस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः''

आर्य संस्कृति में यह वाक्य नारी समाज के प्रति केवल शाब्दिक सद्भावना का प्रर्दशन ही नहीं है अपितु भारतीय गृहस्थ जीवन में पडे–पडे इसकी व्यावहारिक सार्थकता सिद्व होती है। एक मॉ संतान के लिए प्रथम व्यक्ति, प्रथम गुरू,प्रथम हितेषी,प्रथम संरक्षक होती है। यदि शिक्षक व नारी के कर्तव्यों की तुलना की जाये तो हम पाते है कि ये दोनों एक दूसरे के यथार्थ एवं पूरक है। शिक्षक का लक्ष्य मनुष्य का सर्वागीण विकास करना है और व्यक्ति का विकास मूल्यों पर आधारित होता है। यही कारण है कि समाज ने आरम्भिक काल से ही बालकों के सर्वागीण विकास की रूपरेखा सुनिश्चित करके उसे कार्य रूप में परिवर्तित करने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व शिक्षको को सौप दिया एक प्रकार से एक योग्य अध्यापक अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र व समाज का प्रमुख निर्माता होता है। और फिर शिक्षक एक महिला है तो सोने में सुगंध। वास्तविक धरातल पर खडे होकर बात करें तो मॉ का रूप शिक्षा देने के सन्र्दभ में अन्य सभी से महान है। वह बच्चो की भाषा को ममता में आलोपित कर स्वीकारती हैं। छात्र भी उस शिक्षिका से निःसंकोच जुडना चाहते है इससे उसकी सिखने सिखाने की गति दुगुनी हो जाती है। बशर्ते उसके मध्य छात्र : शिक्षक सम्बंध मॉः पुत्र के रूप में ढला हो।

महात्मा गॉधी के अनुसार, हृदय की शिक्षा प्रदान करना ही शिक्षा का प्रधान कार्य है इसी में शिक्षा की सार्थकता निहित है। यदि हम व्यक्ति का चरित्र उन्नत करने में सफल हो जाते है तो हमारा समाज स्वतः ही सुधर जाएगा और उन्नति की ओर अग्रसर होगा। शिक्षकों के व्यवहार का प्रभाव छात्रो के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। यदि शिक्षक एक महिला हो तो पुरूष की अपेक्षा कही अधिक प्रभावी होता है क्योंकि नारी के पास स्पर्श की भाषा है, ममताका मधु है, पुचकार का अमोध अस्त्र है, आत्मदर्शन की दृष्टि है, अंगुली के पोरों की लिपि है मन की आवाज सुनने के कान है और लोरिया को बाली है, जिसके बल से बारीक से भी बारीक तन्तुओं से अपनी सन्तान से जुडकर उसको भावनाओं से बांधे रखती है। ये ही गुण एक शिक्षक के लिए अनिवार्य है। मानवता बोध व सांस्कृतिक चेतना में अध्यापक शिक्षा की एक मुख्य भूमिका रहती है और मां बालक के सम्पर्क में अधिक होती है। अतः वहं इन मूल्यों का विकास अधिक प्रभावी रुप से कर सकती है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही शोधकर्ती ने यह जानने का प्रयास किया है कि विभिन्न स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में कार्यशील महिला अध्यापिकाआं की मूल्यों में कितनी आस्था व विश्वास है। क्योंकि जब उनकी मूल्यों में आस्था व विश्वास होगा तो ही वह अपने बच्चों व छात्रों में इसका विकास कर पायेगी।

शोध में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली

- **महिला अध्यापिकाएं :** प्राथमिक व माध्यमिक विधालय में कार्यरत महिला अध्यापिकाएं
- **मूल्य :** मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना व वरीयता प्रकट करते है, जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति जीता है तथा आजीवन प्रसार करता है।

* प्राचार्या, रेखा टी.टी. कॉलेज, सांझरिया, अजमेर रोड़, जयपुर, राजस्थान।

शोध के उद्देश्य

- शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक व माध्यमिक विधालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के मूल्यों का पता लगाना।
- महिला अध्यापिकाओं के मूल्यों की आपस मे तुलना करना।
- महिला अध्यापिकाओं के मूल्यों के विकास के लिए सुझााव देना।

शोध की परिकल्पनाएं

- ग्रामीण माध्यमिक एवं ग्रामीण प्राथमिक विधालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नही होता है।
- शहरी माध्यमिक व शहरी प्राथमिक विधालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नही होता है।
- ग्रामीण प्राथमिक व शहरी प्राथमिक विधालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नही होता है।
- ग्रामीण प्राथमिक व शहरी माध्यमिक विधालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नही होता है।
- ग्रामीण माध्यमिक व शहरी प्राथमिक विधालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नही होता है।
- ग्रामीण माध्यमिक व शहरी माध्यमिक विधालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नही होता है।

शोध की परिसीमन

प्रस्तुत शोध जयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के प्राथमिक व माध्यमिक विधालयों की 50–50 महिला अध्यापिकाओं तक सीमित रखा गया है।

न्यादर्श का चयन

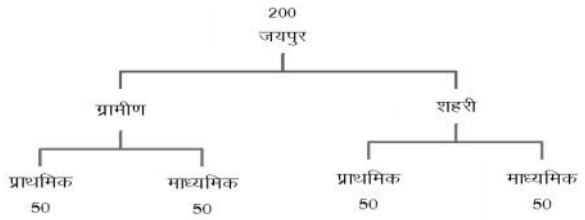

शोध विधि

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रविधियां

- मध्यमान (Mean)
- मानक विचलन (S.D.)
- टी. परीक्षण (T. Test)
- प्रतिशत (Percentage)

उपकरण

डा. आर.के.ओझा का मूल्य परीक्षण (हिन्दी)

प्रदतों का विश्लेषण व व्याख्या

तालिका–1

ग्रामीण व शहरी प्राथमिक व माध्यमिक महिला अध्यापिकाओं के मूल्यों के मानक अंको का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं	समूह	संख्या	सैद्वान्तिक	आर्थिक	सौन्दर्यात्मक	सामाजिक	राजनैतिक	आर्थिक
1	ग्रामीण विद्यालय	50	5.24	5.42	3.82	5.38	6.30	5.38
2	ग्रामीण विद्यालय	50	5.04	5.66	3.84	5.30	6.24	5.64
3	शहरी विद्यालय	50	5.16	6.22	3.42	5.02	5.16	5.98
4	शहरी विद्यालय	50	5.58	6.20	3.92	5.48	6.22	5.64

चारों समूहों में से तीन समूहों में सबसे अधिक मानक अंक राजनैतिक मूल्य में तथा सबसे कम मानक अंक सौन्दर्यात्मक मूल्य में प्राप्त किये।

तालिका–2

ग्रामीण माध्यमिक व ग्रामीण प्राथमिक विध्यालयों की अध्यापिकाओं के मूल्यों के मानक अंको का तुलनात्मक अध्ययन

क्रं. सं.	समूह	संख्या	T	E	A	S	P	R	Range @	
									High	Low
1	ग्रामीण माध्यमिक	50	5.04	5.66	3.84	5.30	6.24	5.64	6.24	3.84
2	ग्रामीण प्राथमिक	50	5.24	5.42	3.82	5.38	6.30	5.38	6.30	3.82

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि दोनो समूहों ने सबसे अधिक मानक अंक राजनैतिक (पी) में तथा सबसे कम मानक अंक सौन्दर्यात्मक (ए) में प्राप्त किये।

तालिका–3

शहरी माध्यमिक व शहरी प्राथमिक विधालयों की अध्यापिकाओं के मूल्यों के मानक अंको का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0सं0	समूह	संख्या	T	E	A	S	P	R	Range @	
									High	Low
1	शहरी माध्यमिक	50	5.16	6.22	3.42	5.02	5.16	5.98	6.22	3.42
2	शहरी प्राथमिक	50	5.58	6.20	3.92	5.48	6.22	5.64	6.20	3.92

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि प्रथम समूह ने सबसे अधिक मानक अंक आर्थिक सुरक्षा (पी) व सबसे कम सौन्दर्यात्मक मूल्यों में प्राप्त किये वहीं दूसरे समूह ने सबसे अधिक मानक अंक राजनैतिक व सबसे कम तथा सबसे कम मानक अंक सौन्दर्यात्मक मूल्य में प्राप्त किये।

तालिका–4

ग्रामीण प्राथमिक व शहरी प्राथमिक विधालयों की अध्यापिकाओं के मूल्यों के मानक अंको का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	समूह	संख्या	T	E	A	S	P	R	Range @	
									High	Low
1	ग्रामीण प्राथमिक	50	5.24	5.42	3.82	5.38	6.30	5.38	6-30 P	3-82 A
2	शहरी प्राथमिक	50	5.58	6.20	3.92	5.48	6.22	5.64	6-22 P	3-92 A

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि दोनो समूहों ने सबसे अधिक मानक अंक राजनैतिक (पी) में तथा सबसे कम मानक अंक सौन्दर्यात्मक (ए) में प्राप्त किये।

तालिका–5

ग्रामीण प्राथमिक व शहरी माध्यमिक विधालयों की अध्यापिकाओं के मूल्यों के मानक अंको का तुलनात्मक अध्ययन

क्र. सं.	समूह	संख्या	T	E	A	S	P	R	Range @	
									High	Low
1	ग्रामीण प्राथमिक	50	5.24	5.42	3.82	5.38	6.30	5.38	6-30 P	3-82 A
2	शहरी माध्यमिक	50	5.16	6.22	3.42	3.02	5.16	5.98	6-22 P	3-42 A

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि दोनो समूहों ने सबसे अधिक मानक अंक राजनैतिक (पी) में तथा सबसे कम मानक अंक सौन्दर्यात्मक (ए) में प्राप्त किये।

तालिका–6

ग्रामीण माध्यमिक व शहरी प्राथमिक की विधालयों की अध्यापिकाओं के मूल्यों के मानक अंको का तुलनात्मक अध्ययन

क्र. सं.	समूह	संख्या	T	E	A	S	P	R	Range @	
									High	Low
1	ग्रामीण माध्यमिक	50	5.04	5.66	3.84	5.30	6.24	5.64	6-24 P	3-84 A
2	शहरी प्राथमिक	50	5.58	6.20	3.92	5.48	6.22	5.64	6-22 P	3-92 A

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि दोनों समूहों ने सबसे अधिक मानक अंक राजनैतिक मूल्यों में तथा सबसे कम सौन्दर्यात्मक मूल्यों में प्राप्त किये है।

तालिका–7

ग्रामीण माध्यमिक व शहरी माध्यमिक विधालयों की अध्यापिकाओं के मूल्यों के मानक अंको का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0सं0	समूह	संख्या	T	E	A	S	P	R	Range @	
									High	Low
1	ग्रामीण माध्यमिक	50	5.04	5.66	3.84	5.30	6.24	5.64	6-24 P	3-84 A
2	शहरी माध्यमिक	50	5.16	6.22	3.42	5.02	5.16	5.98	6-22 P	3-42 A

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि प्रथम समूह ने सर्वाधिक मानक अंक राजनैतिक मूल्यों में तथा सबसे कम सौन्दर्यात्मक मूल्यों में प्राप्त किये हैं। जबकि दूसरे समूह ने सर्वाधिक मानक अंक आर्थिक मूल्यों में तथा सबसे कम मानक अंक सौन्दर्यात्मक मूल्यों में प्राप्त किये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अस्थाना एवं अग्रवाल (1993): मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- भटनागर, महेश (1992) : आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन शैक्षिक प्रकाशन, आगरा।
- ढोढियाल एस.एम. एवं फाटक ए.बी. (1972) शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- गुप्ता एस.पी. (1995) आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन।
- शर्मा राजनाथ व डॉ0 शर्माः– सामाजिक सर्वेक्षण व अनुसंधान की विधियां।
- सार्न्डेस डोनाल्डः–स्टेटिक्स (पांचवा संस्करण, 1995) मेकग्रो हिल न्यूयार्क।
- सिन्हा एच.सी. (1979) ऐजुकेशन रिसर्च, विकास पब्लिशिंग हाउस, पी.वी.टी. लिमिटेड, न्यू देहली।
- गुप्त, नत्थूलाल–मूल्य परक शिक्षा सिद्वान्त, प्रयोग व प्रविधि (A&AD) मुद्रक–टाईम्स प्रिन्टिंग प्रेस, अजमेर प्रकाशन।
- पाण्डे रामशकल एवं मिश्र करूणा शंकर (2004–05) मूल्य शिक्षण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा रोड।
- A Survey of research in education (IV,V,VI, Ed)
- Indian Education Abstarcts July 2003, January 2004, July 2006.
- प्रतियोगिता दर्पण, जुलाई 2006, अगस्त 2007
- शिविरा, अक्टूबर 2007
- सरस्वती सुमन अगस्त 2007

♦❐♦